Self Respect

16-06-2014

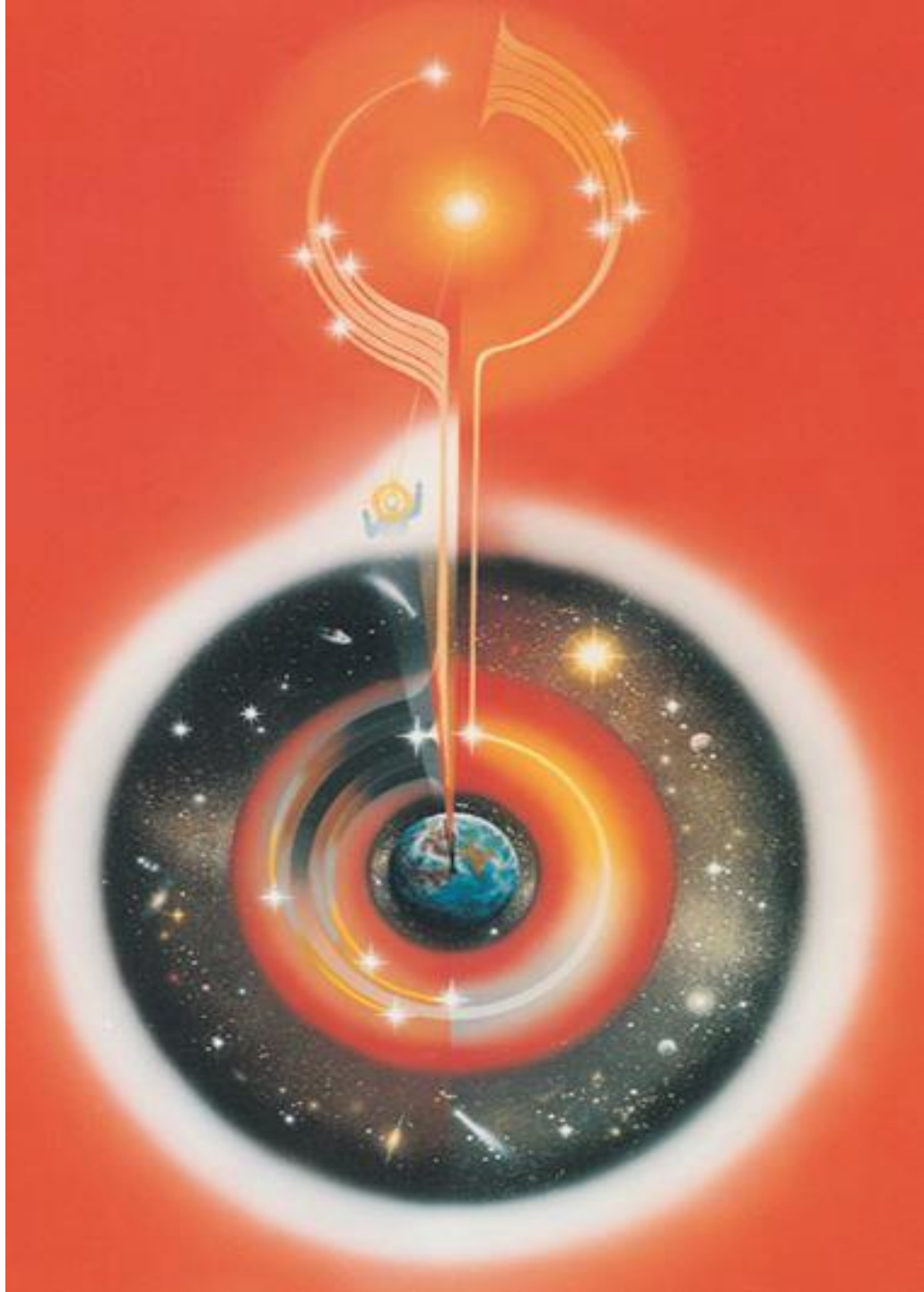

✓5 हज़ार वर्ष पहले पावन दुनिया थी | उसमें आधाकल्प तुम पावन थे, बाकी रहा आधाकल्प | यह बातें और कोई समझ नहीं सकते | तुम जानते हो पतित और पावन, सुख और दुःख, दिन और रात आधा-आधा है |

✓बाप कहते हैं – मीठे बच्चों, तुम पावन थे | नई दुनिया में सिर्फ़ तुम ही थे | बाकी जो इतने सब हैं वह शान्तिधाम में थे |

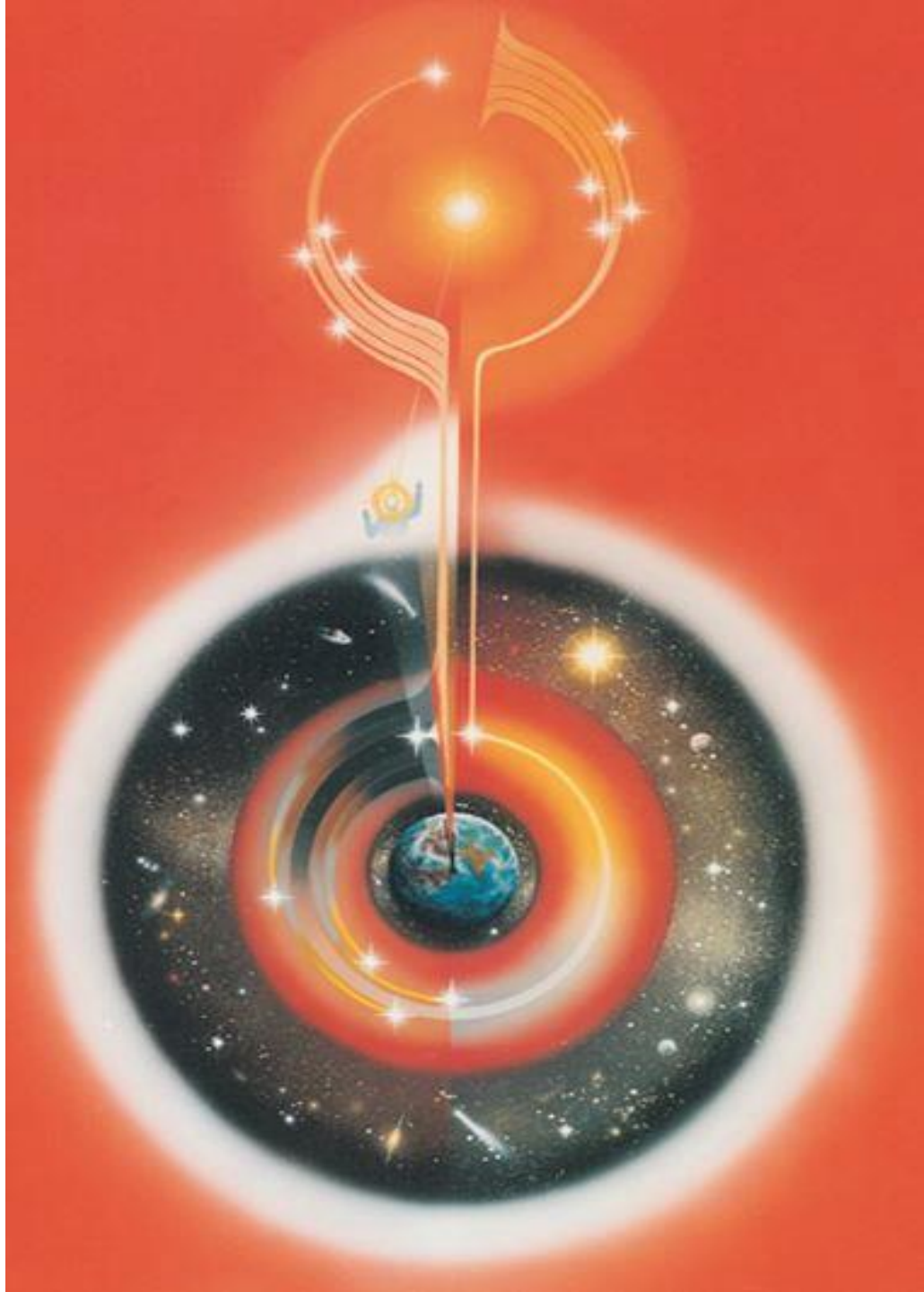

✓अब तुम मीठे बच्चों को कौन समझा रहे हैं? बाप | आत्माओं को परमात्मा बाप समझाते हैं, इसको कहा जाता है संगम | इसको ही कुम्भ कहा जाता है | मनुष्य इस संगमयुग को भूल गये हैं |

✓तुम बच्चों की बुद्धि में है कि सतयुग में बहुत थोड़े देवी-देवता होते हैं | फिर अपने लिए भी कहेंगे हम जीवात्मा जो सतयुग में पावन थी वह फिर 84 जन्मों के बाद पतित बनी हैं |

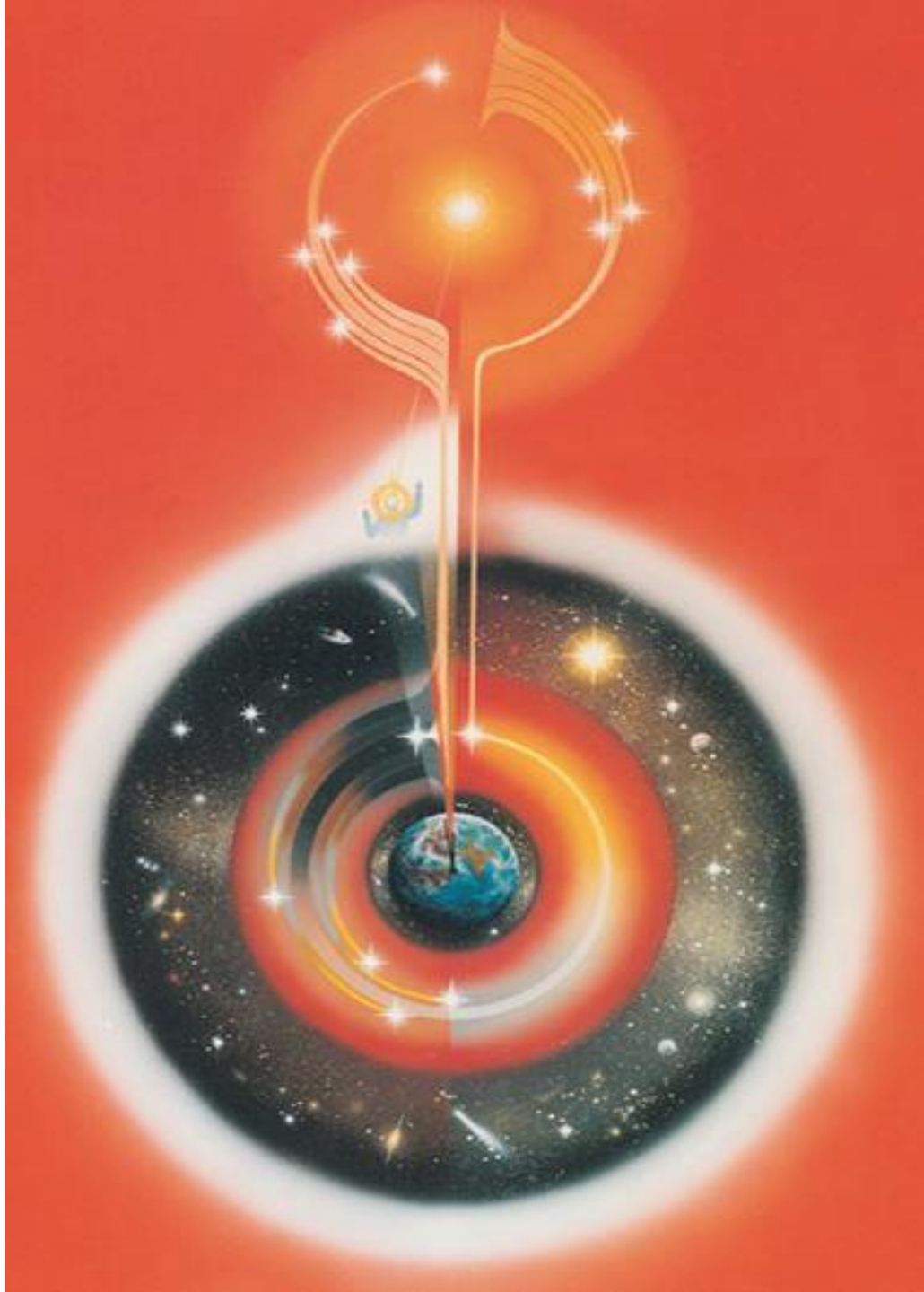

✓आत्माओं को स्वर्ग याद है ना | तुमको तो सबसे ज़्यादा याद है | तुमको दोनों की हिस्ट्री-जॉग्राफी का पता है, और कोई को पता नहीं |

✓तो तुम बच्चों की बुद्धि में है –हम पूज्य देवता थे फिर पुजारी बनें | बाप आकर पतित से पावन बनने की युक्ति बताते हैं कि 5 हज़ार वर्ष पहले बताई थी |

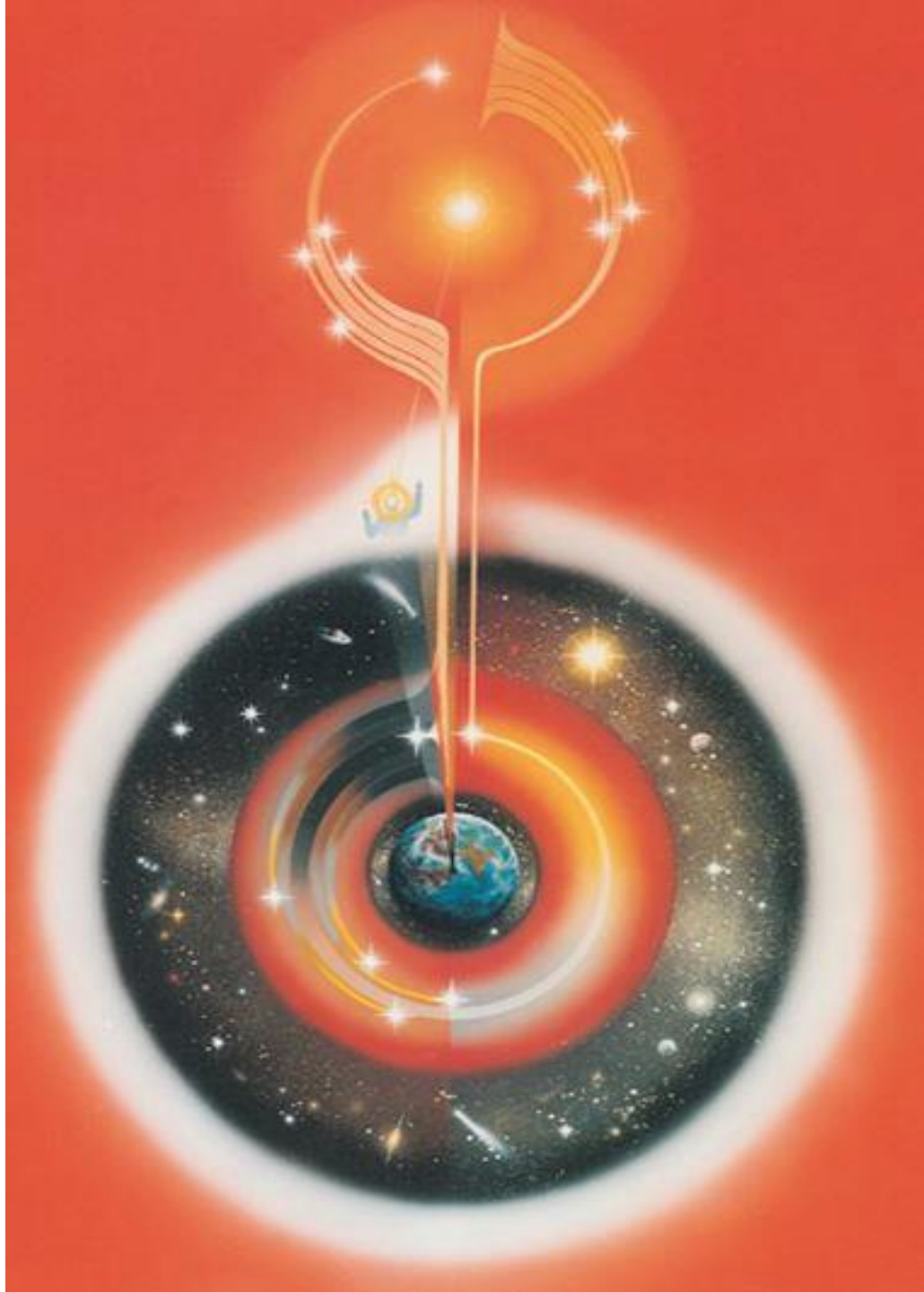

✓अन्त में जब विनाश का समय होगा तब पढ़ाई पूरी होगी फिर तुम शरीर छोड़ देंगे | जैसे सर्प भी एक पुरानी खाल छोड़ देते हैं ना |

✓आत्माओं को परमात्मा बाप का प्यार मिलता है, इस संगमयुग पर | इसको कल्याणकारी संगम कहा जाता है, जबकि बाप और बच्चे आकर मिलते हैं | तुम आत्मायें भी शरीर में हो | बाप भी शरीर में आकर तुमको आत्मा निश्चय कराते हैं |

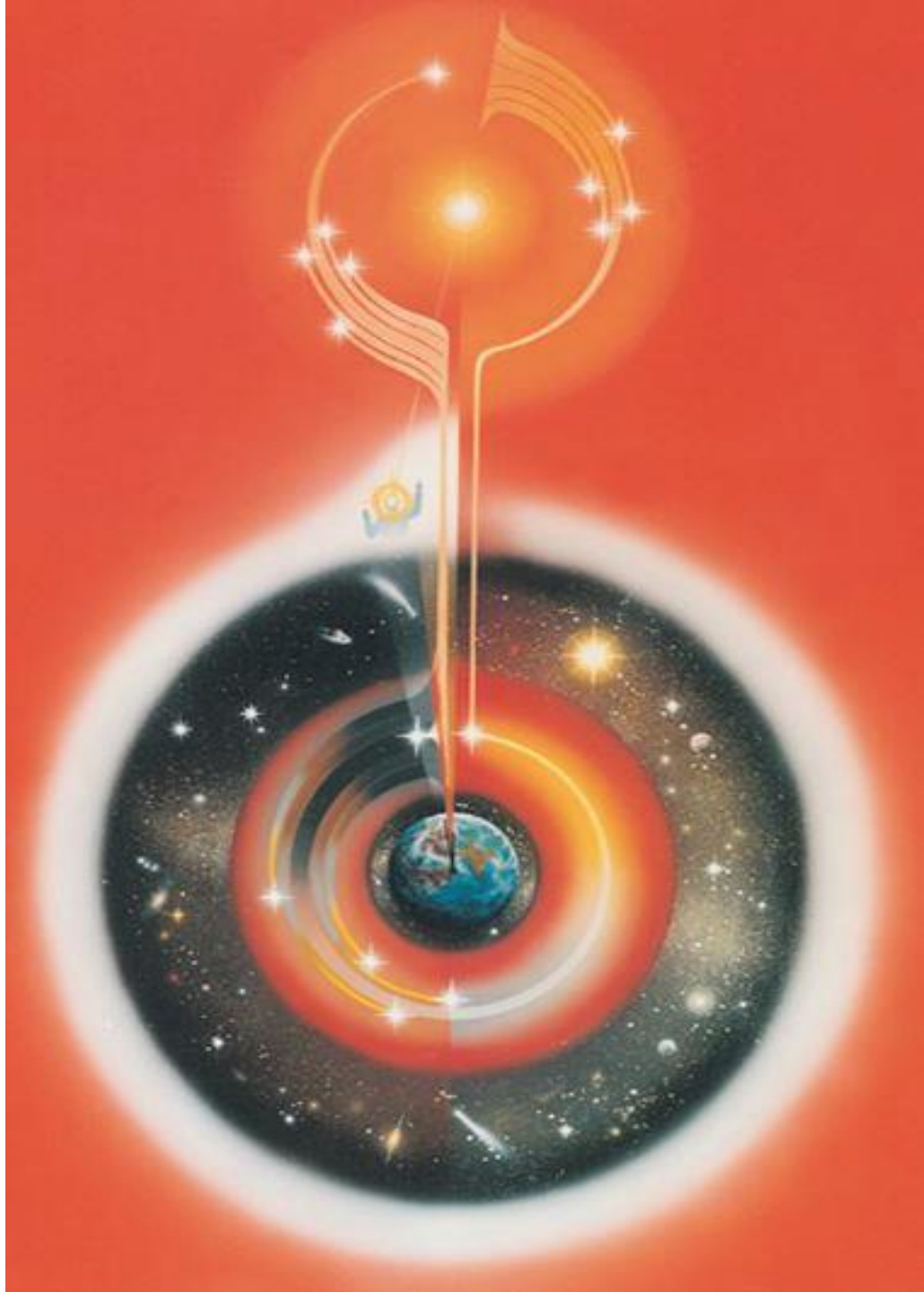

✓ज्ञान सागर बाप तो एक ही है जो तुमको अभी ही पढ़ाते हैं |

✓तुम बच्चे एक ही बार बाप के सम्मुख होते हो | बाप एक ही बार वर्सा देते हैं | फिर बाप को सम्मुख आने की दरकार ही नहीं |

✓ऊँच पार्टधारी बनने के लिए तुम कितना पुरुषार्थ कर रहे हो | कौन पुरुषार्थ करा रहे हैं? बाबा | तुम ऊँच बन जाते हो फिर कभी याद भी नहीं करते हो |

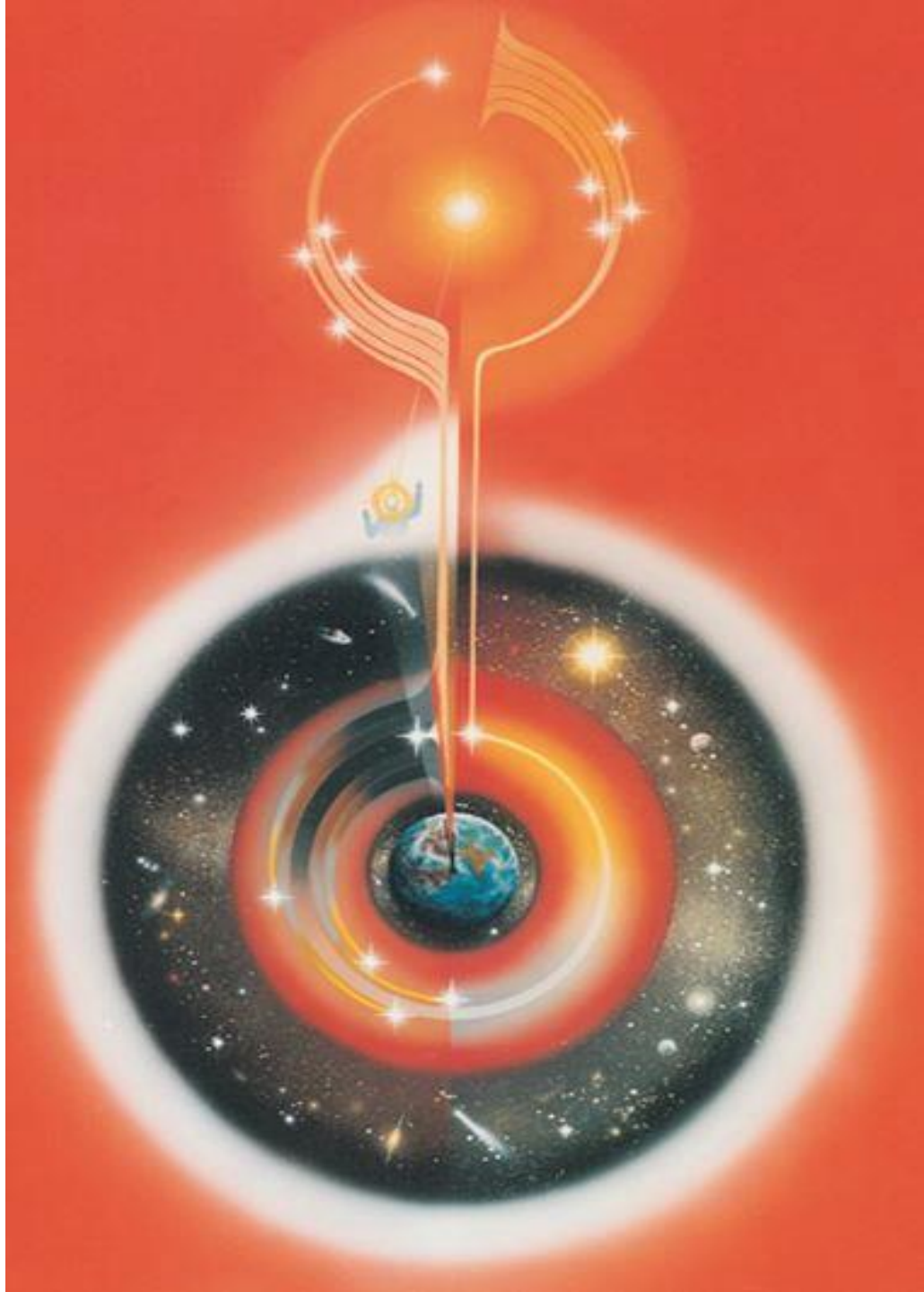

✓हम फिर से अपनी नई दुनिया में जाते हैं | यहाँ तुम आये हो नई दुनिया में जाने के लिए | और कोई सतसंग नहीं जिसमें कोई समझे कि हम नई दुनिया के लिए पढ़ रहे हैं | तुम बच्चों की बुद्धि में है बाबा हमको पहले बेगर बनाकर फिर प्रिन्स बनाते हैं |

✓सतयुग में सभी जागती ज्योत हैं | अभी दीवा बिल्कुल डल हो गया है | भारत में ही दीवा जगाने की रस्म है | और कोई थोड़ेही दीवा जगाते हैं | तुम्हारी ज्योत उझाई हुई है | सतोप्रधान विश्व के मालिक थे, वह ताक़त कम होते-होते अभी कुछ ताक़त ही नहीं रही है | फिर बाप आये हैं तुमको ताक़त देने | बैटरी भरती है |

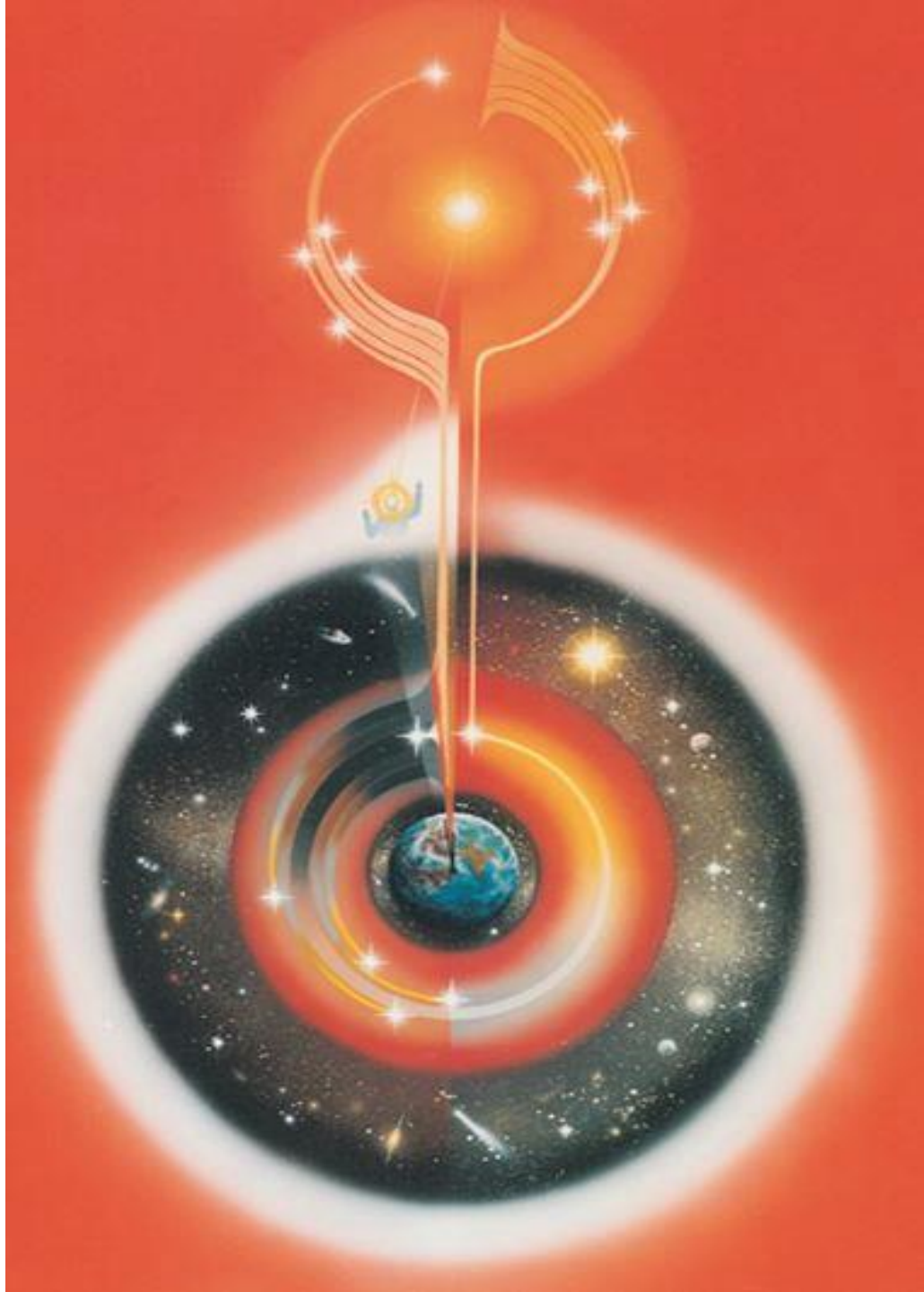

✓सेवा में मान-शान के कच्चे फल को त्याग सदा प्रसन्नचित रहने वाले अभिमान मुक्त भव

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |